ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class 7 वसंत भाग-2

Subject- Hindi Second Language

Topic- कविता

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

DATE- 11/08/21TO 24/08/21

By- नीलम सौंखला

©ISWK

1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

हम पंछी **उन्मुक्त** गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है **कटुक निबौरी**
कनक-कटोरी की मैदा से,

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में

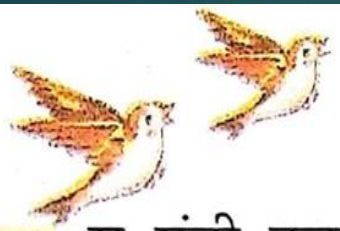

ह

म पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

Scanned with CamScanner

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

Scanned with CamScanner

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

❐ *शिवमंगल सिंह 'सुमन'*

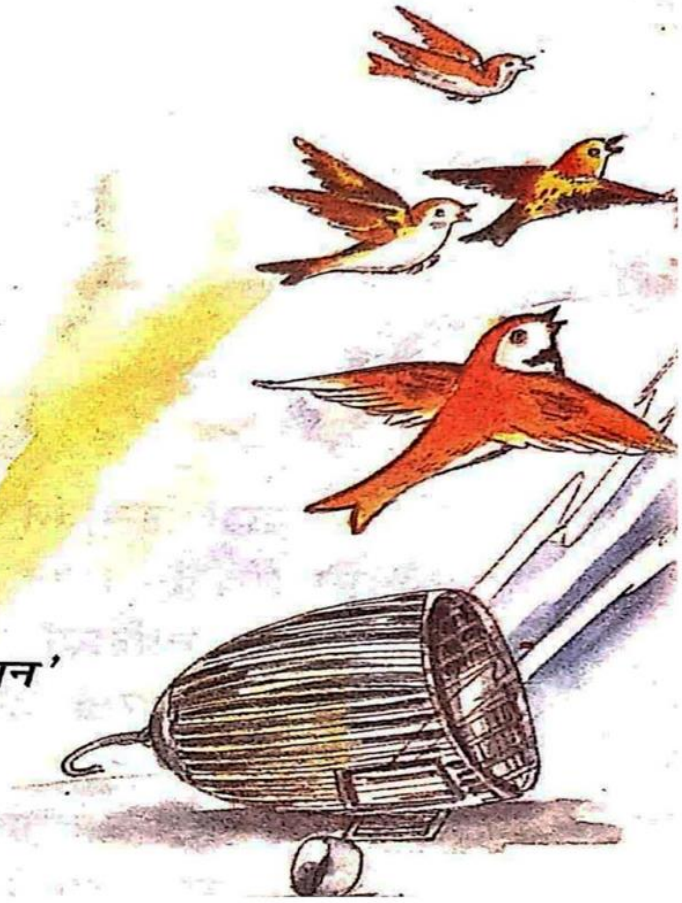

Scanned with CamScanner

कवि परिचय

- 5 अगस्त सन् 1915 को उन्नाव ज़िले के झगरपुर ग्राम में जन्मे शिवमंगल सिंह 'सुमन' हिन्दी गीत के सशक्त हस्ताक्षर हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर तथा डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने वाले 'सुमन' जी ने अनेक अध्ययन संस्थाओं, विश्वविद्यालयों तथा हिन्दी संस्थान के उच्चतम पदों पर कार्य किया।
- अनेक पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित 'सुमन' जी ने अनेक देशों में हिन्दी कविता का परचम लहराया। देश भर के काव्य-प्रेमियों को अपने गीतों की रवानी से अचंभित कर देने वाले सुमन जी 27 नवंबर सन् 2002 को मौन हो गए।

कविता

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएंगे,
कनक – तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएंगे|

हम बहता जल पीने वाले
मर जाएंगे भूखे – प्यासे
कही भली है कटुक निबौरी
कनक – कटोरी की मैदा से|

स्वर्ण - शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं तरु
की फुनगी पर के झूले|

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण – सी चोंच खोल
चुगते तारक – अनार के दाने|
होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखो की होड़ा – होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती सासों की डोरी|

नीड़ न दो चाहे टहनी का

आश्रय छिन्न – भिन्न कर डालो,

लेकिन पंख दिए हैं तो

आकुल उड़ान में विघ्न न डालो|

भाव स्पष्टीकरण

कविता उस समय लिखी गयी थी जब भारत अंग्रेजों के अधीन था| इस कविता में कवि ने परतंत्र भारत वासियों की तुलना पिंजरे में बंद पक्षियों से की है और उनकी आकांक्षा को कविता के रूप में प्रस्तुत किया है| मानव ही नहीं, पशु-पक्षी भी गुलामी की सुख-सुविधाओं से आज़ादी की कठिनाई को श्रेष्ठ बताते हैं|

पराधीनता प्राणी के सुख-स्वप्नों, अरमानों , ऊँचे उठने की प्रतिस्पर्धा तथा जोखिम से जूझने की सहज प्रवृत्ति को कुंठित कर देती है| इसलिए समस्त सुख-सुविधाओं से पूर्ण होते हुए भी गुलामी का जीवन दुखदायी और त्याज्य है तथा सभी अभावों और दुखों को सहकर भी स्वतंत्र होकर जीना अधिक श्रेयस्कर है|

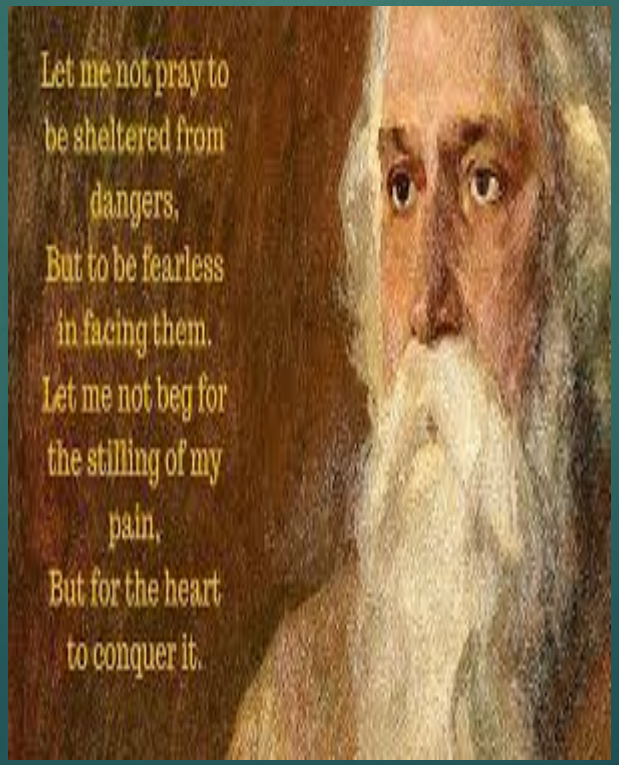

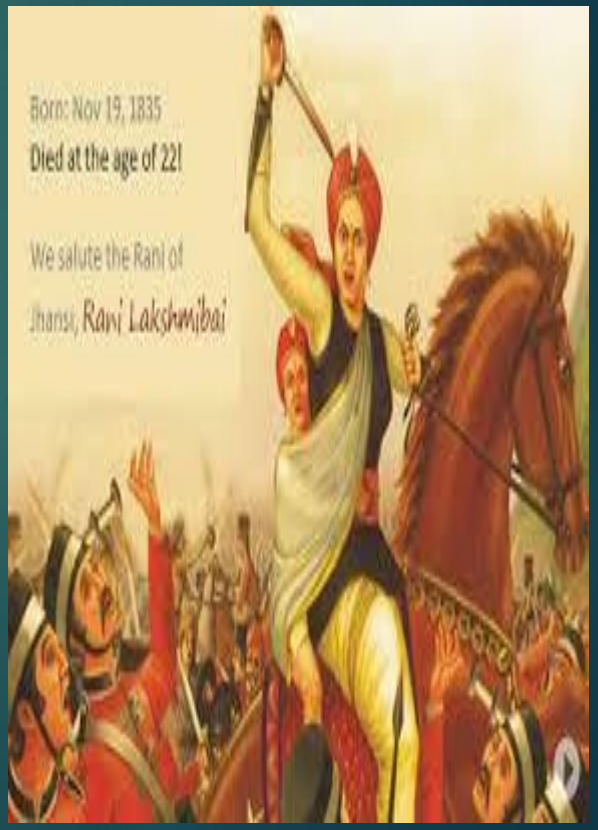

हम पंछी **उन्मुक्त** गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएंगे,
कनक – तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएंगे|

शब्द अर्थ:-

1. पिंजरबद्ध- पिंजड़े में बंधे हुए|
2. उन्मुक्त- खुला|
3. कनक – तीलियों - सोने की सलाखें|
4. पुलकित – खुशी से फड़कते|

मानव-मात्र के स्वतंत्र रहने के अधिकार को लक्षित करते हुए कवि कहते हैं कि खुले आकाश में उड़ने वाले हम पक्षी, पिंजरे में बंद होकर गीत नहीं गा पाएँगे| हमारे पंख सोने के पिंजरे की तीलियों से टकराकर टूट जाएँगे|

हम बहता जल पीने वाले
मर जाएँगे भूखे – प्यासे
कही भली है कटुक निबौरी
कनक – कटोरी की मैदा से|

शब्द अर्थ:-

1. भली- अच्छी
2. कटुक- कड़वी
3. निबौरी- नीम का फल|
4. कनक- सोना|

बहती हुई नदी का जल पीनेवाले हम पिंजरे में कैद होकर भूखे-प्यासे मर जाएँगे| पिंजरे में रखी सोने की कटोरी की मैदा से हमें कड़वी निबौरी अधिक प्रिय है|

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों मे देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले|

शब्द अर्थ:-

1. स्वर्ण-शृंखला - सोने की कड़ियाँ
2. गति- चाल
3. तरु- पेड़
4. फुनगी- सबसे ऊँची टहनी का सिरा

इस सोने के पिंजरे में कैद रहकर हम उड़ना प्राय: भूल-सा गए हैं| अब तो बस हम पेड़ की ऊँची टहनी के सिरे पर बैठ कर फुनगी पर झूले झूलने का सपना ही देखते हैं अर्थात स्वतंत्रता ही हमारी एकमात्र कामना है|

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण– सी चोंच खोल
चुगते तारक– अनार के दाने|

शब्द अर्थ:-

1. अरमान –इच्छा , ख्वाहिश
2. नभ - आकाश
3. सीमा –अंतिम छोर
4. तारक –तारों के समान

हमारी केवल यही इच्छा रही है कि हम नीले आसमान में उन्मुक्त उड़ते और सूर्य की किरण रूपी अपनी चोंच से तारे रूपी अनार के दाने चुगते| हमारे पंख धरती-असमान की उस मिलन-रेखा को छूने का प्रयास करते जिसकी कोई सीमा नहीं है|

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखो की होड़ा– होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती सासों की डोरी|

शब्द अर्थ:-

1. सीमाहीन – जिसका कोई अंत न हो|
2. क्षितिज – आकाश का वह हिस्सा जो धरती से मिलता हुआ दिखाई देता है|

1. होड़ा – होड़ी – प्रतिस्पर्धा
2. तनती सासों की डोरी – मर जाना, प्राण निकल जाना

या तो हम उड़ते-उड़ते क्षितिज के आखिरी छोर तक पहुँचने का प्रयास करते या अपने प्राण त्याग देते|

नीड़ न दो चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न – भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान मे विघ्न न डालो|

शब्द अर्थ:-

1. नीड़ – घोंसला|
2. आश्रय - सहारा|
3. छिन्न – भिन्न – नष्ट|
4. विघ्न – बाधा|

हमें कैद करने वालों , हमारा तुमसे केवल यही निवेदन है कि तुम चाहे हमें पेड़ की टहनी का आश्रय न दो, हमारे घोसलों को भी तुम तोड़ डालो किंतु हमारी स्वतंत्र उडान में किसी भी प्रकार की बाधा मत डालो हमें उन्मुक्त भाव से उड़ने दो|

छात्र गतिविधि- कक्षा में चर्चा -

1. परिचर्चा - पक्षी संरक्षण के लिए हम क्या उपाय कर सकते हैं |

2. अनुच्छेद लेखन – पक्षियों को पिंजरे में बंद करने से केवल उनकी आज़ादी का हनन ही नही होता, अपितु पर्यावरण भी प्रभावित होता है|

3. इस कविता में पक्षियों के माध्यम से क्या संदेश दिया गया है?

STAY HOME
BE SAVE

घर पर रहें
सुरक्षित रहें।

धन्यवाद